Dr. Savitri Singh.
Associate Professor.
R.M.C SASARAM

गीतिकाव्य के रूप में मेघदूत की समीक्षा

गीतिकाव्य संस्कृत भारती का परम रमणीय अंग है, गीतिकाव्य ऐसा लघु काव्य है, जिसमें कथा वस्तु अत्यन्त लघु होता है, किन्तु कवि के कल्पना प्रसूत मोती उसे भव्य माला का रूप दे देते हैं। इसे खण्ड काव्य भी कहते हैं। आचार्य विश्वनाथ ने इसकी परिभाषा इस प्रकार से दी है "खण्ड काव्यम् भवेत्काव्यस्यैक देशानुसारि च"।

गीतिकाव्य की आत्मा भावातिरेक होती है, कवि जब भाव विह्वल हो उठता है उसकी भावनात्मक अनुभूति और कल्पना बाह्य अभिव्यक्ति के रूप में परिनत होने को तत्पर हो उठती है। वही विषय और वस्तु अत्यन्त भाव भव्य हो उठता है।

गीति काव्य के प्रमुख तत्व कल्पना, भावना, और संगीत है, रसात्मकता इसका अनिवार्य गुण है, भावमयता या भावप्रधानता का होना तो आवश्यक है ही गीतिकाव्य का भाव अत्यन्त सूक्ष्म और गहन होता है। कोई एक भाव मुख्य होकर केन्द्र में रहता है। अन्य भाव सहायक बन उस भाव को अभिवृद्ध, समृद्ध, और परिपुष्ट करते हैं। इसे भावान्विति की संज्ञा दी जा सकती है। सहज अन्तःप्रेरणा नितान्त आवश्यक है। गीतिकाव्य में विषय का आधार तो नाम मात्र का ही रहता है, काव्य वस्तुतः कवि के व्यक्तित्व का प्रतिफल होता है, संक्षिप्तता तथा गेयता भी गीति काव्य के उपलक्षण हैं; इन सब तत्व के सहयोग से गीतिकाव्य जगत में उत्कृष्ट स्थान रखता है। मधुर पदावली के साथ-संगीत-मय छन्दों का प्रयोग किया जाता है, श्रृंगार, वैराग्य, प्रकृति इत्यादि नीति इत्यादि मुख्य विषय होते हैं। इसके बाह्य तथा आन्तरिक दोनों स्वरूप सुन्दर होते हैं

गीतिकाव्य मुक्तक और प्रबन्ध दो प्रकार के है। भर्तृहरि तथा अमरुक का नाम इस क्षेत्र में प्रमुख है। इनके नीति शतक, वैराग्य शतक मुक्तक गीति काव्य का उदाहरण है कालिदास का मेघदूतम् एक उत्कृष्ट प्रबन्ध गीतिकाव्य है।

शृंगार रस अपनी पूर्णता के साथ गीति-काव्य में चित्रित होता है। सम्भोग एवं विप्रलम्भ शृंगार का मार्मिक चित्रण इसका महती विशेषता है। नारी प्रेम विशुद्ध रूप में वर्जित है। इस प्रकार अपनी विशेषताओं के कारण गीतिकाव्य का साहित्य जगत में एक अनुपम स्थान है।

गीतिकाव्य के रूप में मेघदूतम् की समीक्षा

संस्कृत के गीतिकाव्यों का आदिम ग्रन्थ महाकवि कालिदास का मेघदूत है। जिसमें धनपति कुबेर के शाप से निर्वासित एक विरही यक्ष की मनोव्यथा का मार्मिक चित्रण है। निर्वासित यक्ष रामगिरि पहाड़ पर रहता था तथा अपनी पत्नी के पास समाचार भेजना चाहता है। इस छोटी सी प्रसंग को कवि ने कोमल कल्पना के सहारे अत्यन्त रोचक एवं विशाल रूप प्रदान किया है।